सुसाइड नोट

(कविता-संग्रह)

'साथी' जहानवी

(अजय कुमार शर्मा)

समर प्रकाशन

समर प्रकाशन
64-ए, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर
दूरभाष : 0141-2213700, 98290-18087
ई-मेल : samarprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © अजय कुमार शर्मा

प्रथम संस्करण : 2020

ISBN :

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'

आवरण संयोजन : समर टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर

मूल्य : ₹ 150/-

SUICIDE NOTE (POETRY) by 'Sathi' Jahanavee (Ajay Kumar Sharma)

धरती माँ,

हर उस जीव,

नदिया व शजर को

जिसकी वज़ह से यह क़ायनात

ख़ूबसूरत, महफ़ूज़ व ख़ुशहाली से आबाद है

और

माँ की निस्वार्थ

ममता, करुणा, स्नेह,

वात्सल्य और इन्सानियत

जो किसी भी मज़हब, धन दौलत

लोभ लालच और दीनो ईमान से परे हैं

अनुक्रम

बद से बदतर	11
दलित	15
हो सकता है कि	16
सत्यम् शिवम् सुन्दरम्	22
असली मज़हब	30
मेरा चरित्र	33
राजनीति	38
एक और एक	45
माँ की ममता	49
जबरदस्ती	52
शजर-ज़मीन और बीज	55
ऋतुराज बसन्त	64
सनातन धर्म संस्कृति : एक	67
सनातन धर्म संस्कृति : दो	70
सनातन धर्म संस्कृति : तीन	73
सनातन धर्म संस्कृति : चार	75
सनातन धर्म संस्कृति : पाँच	77
सनातन धर्म संस्कृति : छह	79
भले ही औरत	82
कम से कम : एक	98
कम से कम : दो	100
कम से कम : तीन	102
कम से कम : चार	104
कम से कम : पाँच	106
कम से कम : छह	108
कम से कम : सात	110
कम से कम : आठ	112
कम से कम : नौ	114
कम से कम : दस	116
काल्पनिक कायरता	117
सुसाइड नोट	119

मेरी क़लम से मेरे ख़यालात

पूर्व में 18 काव्य संग्रहों के विमोचन के बाद अब एक ग़ज़ल संग्रह 'ख़ुद को बहुआयें', दो रूमानियत मुक्तक संग्रह 'जंजीरों में हवा', 'अज्ञातवास', आठ छन्द मुक्त कविता संग्रह 'इलाज ही बीमार', 'दो मिनट का मौन', 'एकलव्य का अँगूठा', 'जीवन ही जेल', 'चुल्लू भर पानी में', 'गिरेबान में झाँक कर', 'रोटी में भूख', 'सुसाइड नोट' प्रकाशित कराने की ओर अग्रसर हूँ।

लिखना और पढ़ना मेरे लिये एक नियमित दैनिक प्रक्रिया है इसलिये इतना कुछ लिखने का मुश्क़िल काम सहजता और सरलता से मेरे लिये बहुत आसान रहता है। लिखने के लिये मुझे कोई विशेष मेहनत नहीं करनी पड़ती। नियमित दैनिक दिनचर्या में जो पढ़ता, देखता, सुनता, समझता और सहन करता हूँ उसको ही कुछ अलग संवेदनशील तरह से सोच कर लिखना ही मेरे लिये एक रचना कर्म है। जो कभी ग़ज़ल में तो कभी मुक्तक तो कभी कविता के रूप में आकार लेकर साकार होता है। रचनाओं की विषय वस्तु में अक्सर संवेदनशील करुणा के साथ व्यंग्य होता है। क्योंकि:-

मैं जब ख़ुद के भीतर जाता हूँ
तब तो मैं ख़ुद भी तर जाता हूँ
ख़ुद ही ख़ुद को लायक समझ
मुश्क़िल भी आसाँ कर जाता हूँ

मुझे साहित्य की किसी भी विद्या की कोई विशेष जानकारी नहीं है इसलिये मैं अपने आपको साहित्यकार नहीं मानकर एक मेहनती और ईमानदार रचनाकर्मी मानता हूँ। इसलिये इन रचनाओं को व्याकरण के दृष्टिकोण से परखना उचित नहीं होगा। क्योंकि:-

मैं तो वैसा भी नहीं, मैं तो उनके जैसा भी नहीं
मैं जैसा भी हूँ वैसा ख़ुद को हाज़िर कर रहा हूँ

इन काव्य संग्रहों की रचनायें रहस्य और छायावाद में न होकर इन रचनाओं की विषयवस्तु, सोच और शब्दों का चयन इस प्रकार किया गया है कि स्पष्टवादिता से समाज का हर वर्ग, किसी भी उम्र का इन्सान इन रचनाओं को आसानी से समझ ले और उसको अपने अहसास और जज़्बात, ख़्वाब और ख़याल इन रचनाओं में मिले क्योंकि इन रचनाओं की विषय वस्तु व्यक्तिगत नहीं होकर समग्र समाज का चिन्तन और मनन का दृष्टिकोण है। क्योंकि:-

जिसमें मिला उसी रंग का हो गया
पानी का यही रंग तो हिन्दुस्तानी है

बहुत कुछ ऐसा होता है जो आँखों ने देख तो लिया, नज़रों में आकार, साकार भी हो गया, अहसास और महसूस भी कर लिया मगर कहने और लिखने के लिये शब्द नहीं होते। वैसे भी बहुत कुछ ऐसा भी लिखने में आ जाता है जो कल्पनाओं से परे की सच्चाई होते हैं। कई बार सामान्य सी विषय वस्तु पर भी बहुत कुछ बहुत अच्छा लिखने में आ जाता है तो कई बार बहुत अच्छी विषय वस्तु पर भी कुछ भी लिखने में नहीं आता है। कुछ भी नहीं लिख पाना या बहुत कुछ लिख जाना यह सब मनोस्थिति पर निर्भर करता है। कुछ तहरीरें पत्थरों पर लिखी हुई तहरीर जैसी होती है जो समय के साथ धूमिल होकर मिट जाती हैं मगर कुछ तहरीरें दिलो दिमाग़ में असर कर जाती हैं वो लिखी हुई नहीं होकर भी कभी नहीं मिटती। क्योंकि:-

आँखों के पास कहने को ज़ुबान नहीं
ज़ुबान के पास आँखों के बयान नहीं
न तो कानों सुनी और न आँखों देखी
कोई सच दिले आवाज़ के समान नहीं

इन रचनाओं में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, मानसिक राजनैतिक और सरकारी विसंगतियों, कुरीतियों, जातिवाद, छुआछूत, लिंग भेद, क़ानून व्यवस्था, ख़ुदग़र्ज़ी, बेईमानी, चालाकी, मक़्क़ारी, ज़ुल्मो सितम, अपराध, बेरोजगारी, बनावटी रिश्ते, ईर्ष्या, रंजिश, नफ़रत, धार्मिक उन्माद, देश द्रोह, आंतकवाद, चोरी, हत्या, जमाखोरी, मुनाफाखोरी, रिश्वत, बालश्रम, यौन शौषण इत्यादि बुराईयों पर आसान

शब्दों और सामान्य सोच के साथ व्यंग्य करके आम आदमी को समझाने की कोशिश की गई है। क्योंकि:-

जब ज़ुबान से लफ़्ज ख़ामोश हो जाये
ख़ामोश निगाहों का फिर आवाज़ होना

मैं हर उस जीव जन्तु और हर उस जर्रे-जर्रे का बहुत आभारी हूँ जो मेरी इन संवेदनशील रचनाओं की विषय वस्तु बने हैं। उम्मीद है कि आपको ये रचनायें पसन्द आयेंगी। आशा ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्वास है कि आप अपने अनमोल विचारों से इस तुच्छ रचनाकर्मी को अवश्य अवगत करायेंगे। ताकि भविष्य में इन सुझावों पर ध्यान दिया जा सके। इन रचनाओं से अगर किसी का तन-मन, दिलो दिमाग़ आहत होता हैं तो मैं इसके लिये अग्रिम क्षमा प्रार्थी हूँ। क्योंकि:-

वैसे तो मैं चलायमान समय हूँ 'साथी'
हँसते और हँसाते गुज़रे तो आसान हूँ

इन रचनाओं को काव्य संग्रह के लायक बनाने में जो अनमोल सहयोग श्री भगवत सिंह जादौन 'मयंक', श्री भगवती प्रसाद पंचौली और श्री शम्भू दयाल विजय ने किया है उसके लिये मैं उनका बहुत-बहुत आभारी हूँ। इस मुक्तक के साथ अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

ज़माने ने पाग़ल समझ कर खारिज़ कर दिया
उनके पाग़लपन ने ही उन्हें वाज़िब कर दिया
इल्म व हुनर का एक वही तो बेताज बादशाह
जिसने वास्ते इल्म अपने को जाहिल कर दिया

तहेदिल से आपका अपना

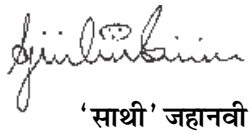

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

बद से बदतर

कंजूस

जब दौलतमन्द इन्सान
बेहिसाब धन और दौलत को
तीजौरियों में बन्द कर
कंजूस और मक्खी चूस होकर
जीवनयापन के लिये
अति आवश्यक खर्च भी
नहीं करते हैं तो
फिर ऐसे दौलतमन्द इन्सान
भूखे प्यासे भिखारी
फटे हाल ग़रीब से भी
बदतर इन्सान हो जाते हैं

हैवान

जब बुजुर्ग इन्सान
संत फकीर के चोले में
किसी बेबस और मासूम की
अस्मत को लूटते हैं तो
फिर ऐसे इन्सान हैवान से भी
बुरे और बदतर हो जाते हैं

अधर्म

जब मन्दिर मस्जिद में
धर्म की आड़ में
मज़बूर से बलात्कार होते हैं
या फिर आंतकी और अपराधी
पनाह लेते हैं तो
फिर ईश्वर के
पवित्र स्थान भी
गुण्ड़ों के अड्डों से भी
बुरे और बदतर हो जाते हैं

तानाशाह

जब इन्सान सत्ता
और दौलत के नशे में
मद मस्त होकर
असहाय ग़रीबों,
ज़रूरतमन्दों और कमजोर
बच्चों और स्त्रियों पर
तानाशाह और अत्याचारी होकर
जुल्म और सितम करते हैं तो
ऐसे इन्सान शैतान से भी
बुरे और बदतर हो जाते हैं

ख़ुदग़र्ज़ी

जब इन्सान चालाकी,
मक्कारी और ख़ुदग़र्ज़ी में
इन्सानियत और शराफ़त का

नाजायज़ फायदा उठाते हैं तो
ऐसे इन्सान भेड़िये से भी
बदतर जानवर हो जाते हैं

हैसियत

जब इन्सान ख़ून के
रिश्ते नातों को भी
दौलत और हैसियत की
तराजू में तौलते हैं तो
ऐसे ख़ुदग़र्ज़ इन्सान
बेईमान और जानलेवा
मिलावटखोर व्यापारी से भी
बदतर व्यापारी हो जाते हैं

दुश्मन

जब दोस्त
पीठ पीछे वार
और बुराई करते हैं
या फिर दुश्मन से
साठ गाँठ रखकर
षडयन्त्र रचते हैं तो
फिर ऐसे कायर
और डरपोक दोस्त
दुश्मन से भी बदतर होते हैं

अंहकार

जब इन्सान में ज्ञान,
सोच और समझ का

घमण्ड होता है तो
फिर अंहकार का ज़हर
मन और मस्तिष्क को
विषैला सर्प बना देते हैं
जिससे इन्सान का
चन्दन के जैसे जीवन
घमण्ड में आलसी और निकम्मे
अजगर से भी बदतर हो जाते हैं

ज़लालत

जब इन्सान इन्सानियत से
शर्मसार और ज़लालत में
हर तरह से लाचार होकर
जानवरों से भी बुरा
मनुष्य जीवन जीते हैं तो
फिर इन्सान जानवरों से भी
बुरे और बदतर हो जाते हैं।

दलित

इन्सान से बदतर
होता है जानवर
अगर कोई इन्सान
छुआछूत, भेदभाव,
रहन सहन, खान पान,
बन्धुआ मज़दूरी, गुलामी
और क़र्ज़ से आर्थिक,
सामाजिक, धार्मिक, शारीरिक
और मानसिक प्रताड़ना
और अत्याचारों से मज़बूर होकर
अभाव ग्रस्त दीन हीन
निर्धन और कंगाल का
जानवरों से भी बदतर
मनुष्य जीवन जी रहा है तो
वो असहाय इन्सान है
हैरान और परेशान
बेबस और निर्धन
ज़माने का सताया हुआ
जानवरों से भी बदतर
क़िस्मत का मारा बदनसीब दलित।

हो सकता है कि

ख़ुशहाली में कंगाली

मैं मिठाई खाता हूँ
तो इसका यह मतलब है कि
मुझे खाने में हर रोज
दाल-रोटी तो ज़रूर मिलती होगी
मगर यह भी हो सकता है कि
मेरी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं हो
यह सब मैंने सोचसमझ कर
दिखावे के लिये किया हो

पर्दे में पर्दा

मैं अच्छे कपड़े पहनता हूँ
तो इसका यह मतलब है कि
मेरे पास ज़रूरत के सभी
सामान्य कपड़े तो ज़रूर होंगे
मगर यह भी हो सकता है कि
यह कपड़े मेरे दोस्तों के हो
या फिर मैंने किराये पर लिये हो

ख़ुशी में ग़म

मैं सभी इन्सानों से
हँसकर मिलता हूँ

तो इसका यह मतलब है कि
मैं सुखी और ख़ुशहाल हूँ
मगर यह भी हो सकता है कि
मैं मानसिक रूप से
बहुत हैरान और परेशान हूँ
यह सब कुछ मैंने
मेरे दुख और ग़म
छुपाने के लिये किया हो

सोने में पीतल

मेरे पास महँगी कार
और आलीशान मकान है
तो इसका यह मतलब है कि
मैं साधन-सम्पन्न हूँ
मगर यह भी हो सकता है कि
यह सब ऋण से खरीदें हो
और मैं क़र्ज़ में डूबा हुआ हूँ

मुहब्बत में नफ़रत

हम सभी परिवार के सदस्य
आपस में एक दूसरे से
ख़ुश मिजाज़ होकर मिलते हैं
तो इसका मतलब यह है कि
हमारे आपस में एक दूसरे से
मधुर और स्नेह के सम्बन्ध हैं
और हम सभ्य और संस्कारी हैं
मगर यह भी हो सकता है कि
हम सभी आपस में

एक दूसरे से ईर्ष्या, रंजिश,
नफ़रत और मनमुटाव रखते हों

ईमान में बेईमान

मेरा समाज में बहुत मान-सम्मान है
तो इसका यह मतलब है कि
मैं दीन और ईमान,
मेहनत और ईमानदारी,
सहयोग और सद्भावना,
सभ्यता और संस्कार के साथ
सामाजिक जीवन जीता हूँ
मगर यह भी हो सकता है कि
यह सब कुछ दिखावा हो
हक़ीकत में दिलो-दिमाग से
मैं बेईमान, खुदगर्ज़, चालाक,
भ्रष्टाचारी और चरित्र हीन हूँ

इंसान में शैतान

मैं सबके साथ
शराफ़त और भाईचारे से
इन्सानियत के साथ रहता हूँ
तो इसका मतलब यह है कि
मैं सहज और सरल
निर्मल और पवित्र हूँ
मगर यह भी हो सकता है कि
यह मेरा दोहरा चरित्र हो
वास्तव में मेरा जीवन
हैवान और शैतान जैसा हो

आस्था में पाखण्ड

मैं नियमित रूप से
ईश्वर की सेवा-पूजा करता हूँ
तो इसका यह मतलब है कि
मैं धार्मिक और आध्यात्मिक हूँ
और परमपिता परमेश्वर की
शक्ति में आस्था रखता हूँ
मगर यह भी हो सकता है कि
मैं कर्मकाण्डी और पाखण्डी हूँ
यह सब मैं अपने बुरे कर्म
छुपाने के लिये करता हो

साहूकार में चोर

मैं बहुत अच्छी रचनायें
बहुत अधिक मात्रा में
लिखता और छपवाता हूँ
तो इसका यह मतलब है कि
मैं बहुत अच्छा और
बहुत बढ़ा रचनाकार हूँ
मगर यह भी हो सकता है कि
मैंए पुराने अच्छे रचनाकारों की
अच्छी रचनाओं की चोरी
और नकल करता हूँ
या फिर अपनी
पुरानी रचनाओं को ही
थोड़ा सा परिवर्तन करके
दुबारा से छपवा लेता हूँ

सद्भावना में दुर्भावना

मैं सभी इन्सानों के
अच्छे कामों की प्रशंसा करता हूँ
तो इसका यह मतलब है कि
मैं सभी के साथ सद्भावना
और सद्विचार रखकर
उनका उत्साह वर्धन करके
उनको अच्छे कामों के लिये
प्रेरित और उत्साहित करता हूँ
मगर यह भी हो सकता है कि
मैं मन से उनके प्रति
ईर्ष्या और रंजिश रखता हो।

मदद में अहसान

मैं अच्छे-बुरे वक्त में
लोगों की मदद करता हूँ
तो इसका यह मतलब है कि
मैं सहयोग और सहकारिता की
सदभावना दिल में रखता हूँ
मगर यह भी तो सकता है कि
मैं ख़ुदगर्ज़ और लालची हूँ
मैं उनकी मदद के बहाने से
उन पर अहसान जताकर
उनकी बेबसी
और मज़बूरी का
नाजायज़ फ़ायदा उठता हो

जायज़ में नाजायज़

मैं लोगों के नाजायज़ कामों को
समाज में नाजायज़ साबित करता हूँ
तो इसका यह मतलब है कि
मैं शरीफ़, सच्चा, ईमानदार,
और इन्साफ़ पसंद इन्सान हूँ
मगर यह भी हो सकता है कि
मैं ख़ुद नाजायज़ काम करता हो
अपने बुरे कामों को छुपाने के लिए
मैंने चेहरे पर मुखौटा लगाकर
शराफ़त का सफ़ेद चोला पहन रखा हो।

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

कच्चा दूध और पानी
सहज और सर्व सुलभ है
जो स्वाभाविक और प्राकृतिक है
जो शिव को अभिषेक में प्रिय है
इस वजह से शिव
दूध और पानी को
वैसे का वैसा ही
स्वीकार और ग्रहण करते है
किसी भी स्वरूप को
बदलने की बात नहीं करते
इसलिये शिव तत्व ही सदैव
सत्यम शिवम् और सुन्दरम् है

शिव स्त्री और पुरुष
अमीर और ग़रीब
मानव और दानव
दलित और सवर्ण
सबके के लिये एक समान
बिना किसी भेदभाव के
सहज और सर्व सुलभ है
इसलिये शिव तत्व ही सदैव
सत्यम शिवम् और सुन्दरम् है

शिव को अपनी आराधना
और उपासना के लिये
आलिशान मंदिर नहीं चाहिये
शिव का सर्दी, गर्मी, बरसात के
ख़राब और विपरीत मौसम में भी
खुले आसमान के नीचे
वीराने और जंगलों में भी
मस्ती से ख़ुशहाल बसेरा है
इसलिये शिव तत्व ही सदैव
सत्यम शिवम् और सुन्दरम् है

शिव संसार की सांसारिक
मोहमाया की दुनिया से दूर
बिना किसी राग-द्वेष के
एक निर्मल और पवित्र
सहज और सरल वैरागी देव है
इसलिये शिव का
कोई भी अवतार नहीं है
इसलिये शिव तत्व ही सदैव
सत्यम शिवम् और सुन्दरम् है

शिव उस व्यक्ति के
व्यक्तित्व का प्रतीक है
जो अपने जीवन को
सुगमता, सरलता, सहजता,
समरसता, विनम्रता, निर्मलता
पवित्रता, सच्चाई, मानवता,
मेहनत और ईमानदारी से जीते है

इसलिये शिव तत्व ही सदैव
सत्यम शिवम् और सुन्दरम् है

शिव संसार की भलाई के लिये
विष तक भी पी लेते है,
प्राणी मात्र के तन मन को
निर्मल और पवित्र करने के लिये
गंगा के प्रचण्ड वेग को
अपनी जटाओं में समा लेते है,
चंचल और व्याकुल चन्द्र को
अपने शिखर पर धारण कर
इन्सान के जीवन में मन की
चंचलता को नियंत्रित, संतुलित,
मर्यादित और मान-सम्मान से रखते है
इसलिये शिव तत्व ही सदैव
सत्यम शिवम् और सुन्दरम् है

शिव ख़ुशहाल पारिवारिक
और दाम्पत्य जीवन के लिये
अर्धनारीश्वर का रूप धारण करते है,
शिव व्यक्तित्व और चरित्र
कला और गीत-संगीत के
विकास और निखार के लिये
नटराज का रूप धारण करते है,
सिर्फ़ पानी के अभिषेक से
प्रसन्न हो जाना प्रतीक है
कम साधनों से भी सुखी रहने का
यानि कि संतोषी सदा सुखी

इसलिये शिव तत्व ही सदैव
सत्यम शिवम् और सुन्दरम् है

अंतिम सत्य मृत्यु को
सदैव सर्प के रूप में
जीवन्त अहसास से
गले में धारण करते है,
सांसारिक मोहमाया को
जग में नश्वर मानते हुये
श्मशान की राख से
अपना श्रृंगार करते है,
मृत्यु से भय मुक्त होकर
आनन्द और प्रसन्नचित
मन से रहने के लिये
काल से निडर होकर
नर मुण्डों की माला
अपने गले में धारण करते है,
निर्भीकता के प्रतीक
जंगल के राजा शेर के चर्म को
बाघम्बर के रूप में धारण करके
तन ढकने की नैतिकता में
न्यूनतम वस्त्र की आवश्यकता से
अपना जीवन-यापन करते है,
नंदी को अपने गण के
रूप में स्थापित कर
पशुओं को भी उचित
मान और सम्मान देते हैं
इस प्रकार सम्पूर्ण प्रकृति को

संयमित और संतुलित रखते है
इसलिये शिव तत्व ही सदैव
सत्यम शिवम् और सुन्दरम् है

शिव में ही? है
और? में ही अखण्ड
व अनन्त ब्रह्माण्ड है
शिव किसी भी काल चक्र
और श्रापों से मुक्त है
इसलिये शिव तत्व ही
आदि.अनादि काल से
सदैव सास्वत, सार्वभौमिक
और निर्विवाद परम ब्रह्म
सत्यम शिवम् और सुन्दरम् है

कृष्ण और विष्णु को
अभिषेक और भोजन में
माखन मिश्री और घी पसंद है
माखन मिश्री और घी
स्वाभाविक और प्राकृतिक नहीं है
दूध के प्राकृतिक स्वरूप को बदलकर
अप्राकृतिक और कृतिम दही बनता है
दही को मथकर मक्खन बनता है
मक्खन को तपाकर घी बनता है
इसलिये कृष्ण और विष्णु
वैसे को वैसे ही स्वीकार नहीं करते
चिंतन, मनन और मंथन की
उम्मीद और अपेक्षा रखते है

इसलिये कृष्ण और विष्णु
शिव की तरह सहज और सरल
निर्मल और पवित्र होकर
सत्यम शिवम् और सुन्दरम् नहीं है

कृष्ण और विष्णु
शिव की तरह से
अमीर और ग़रीब
मानव और दानव
दलित और सवर्ण
स्त्री और पुरुष
सबके लिये एक समान
सर्व सुलभ नहीं है
कृष्ण और विष्णु
विशाल और भव्य
मंदिरों में विराजते है
जहाँ पर हर आम आदमी का
पहुँचाना आसान नहीं होता है
जबकि शिव खुले आसमान के नीचे
कैसी भी परस्थितियों में
ख़ुशी से निवास कर लेते है
इसलिये कृष्ण और विष्णु
शिव की तरह सहज और सरल
निर्मल और पवित्र होकर
सत्यम शिवम् और सुन्दरम् नहीं है

कृष्ण और विष्णु को
छप्पन भोग अर्पित किये जाते है

वैसा ही गरिष्ठ भोजन
दिनचर्या में उपासक करते है
एक गृहस्थ पर भोजन से
दैनिक जीवन शैली पर
बहुत प्रभाव पड़ता है
इसलिये कृष्ण और विष्णु के
उपासक सांसारिक मोहमाया की
दुनिया में रचे-बसे रहते है
इसलिये कृष्ण और विष्णु
शिव की तरह सहज और सरल
निर्मल और पवित्र होकर
सत्यम शिवम् और सुन्दरम् नहीं है

बिना पानी के
जीवन मुमकिन नहीं
जल है तो जीवन है
पानी प्यास को मिटाकर
प्राणी मात्र के जीवन को बचाता है
इसी प्रकार शिव तत्व भी
सहज सरल और निर्मल
जीवन के लिये अति आवश्यक है
इसलिये शिव प्रकृति में सदैव
सत्यम शिवम् और सुन्दरम् है

कृष्ण और रुकमणी
विष्णु और लक्ष्मी
आदर्श दम्पत्ति नहीं है
शिव और पार्वती

संसार में आदर्श दम्पत्ति होकर
जीवन में रंग-बिरंगे बसंत
और सावन के सोलह सोमवार है
शिव जीवन में पारिवारिक
और सामाजिक होते हुये भी
सांसारिक मोहमाया की
जंजीरों में जकड़े हये नहीं है
शिव अपनी पारिवारिक
और सामाजिक ज़िम्मेदारियों को
कर्तव्य समझकर पूरा करते हैं
इसलिये शिव समाज में सदैव
सत्यम शिवम् और सुन्दरम् है

कृष्ण और विष्णु
चतुर और चालाक होकर
सांसारिक मोहमाया से
कई विवादों में लिप्त
और श्रापों से ग्रसित है
इसलिये कृष्ण और विष्णु
मन की चंचलता से
हैरान और परेशान करते है
इसलिये शिव तन-मन में सदैव
सत्यम शिवम् और सुन्दरम् है

असली मज़हब

हम हिन्दू-मुस्लिम
सीख और ईसाई के
अपने-अपने मज़हब में
दीन और ईमान से
सिर्फ़ हिन्दुस्तानी है
फिर हम से किसी को
क्यों और कैसी परेशानी है

हम सदियों से
राजी-ख़ुशी से
साथ-साथ हैं
सारी दुनिया के लिये
यह एक हैरानी है

किसी के बहकावे में
आकर दंगे-फ़साद
फिर तो अपनी
सोच-समझ
बचकानी है

नाकुछ फ़ायदे में
दीन औ ईमान बेचना

यह तो वतन से
ग़द्दारी औ बेईमानी है

रंजिश और नफ़रतों में
नापाक फ़साद की हरकतें
इंसानियत के लिये तो
यह ज़हर खुरानी है

इंसानियत से बढ़ा
कोई भी मज़हब नहीं
अपने-अपने महज़ब की
बढाई तो बेमानी है

शहंशाह के मज़हबी
ज़ुल्मी फ़रमान नहीं
इंसानियत की ही
अजर-अमर कहानी है

किसी के भी मज़हबी
दरिया की पहचान
इंसानियत के समन्दर में
यह तो सिर्फ़ नादानी है

मज़हबी सावधानी हटी
दंगाई दुर्घटना घटी
इंसानियत की सड़क
दंगे फ़साद में सावधानी है

एक-दूसरे से
दुआ-सलाम के लिये
बेचैन और बेताब
पाक मज़हब की
यही तो मेहरबानी है।

मेरा चरित्र

मैं पुरुष हूँ
और
मेरे मन की
मेरे ख़्वाबों की
मेरे ख़यालों की
मेरे रोम-रोम की
मेरे दिलो-दिमाग की
हसीन और खूबसूरत
निर्मल और पवित्र
नैतिकता और चरित्र से
प्रेम की भावनाओं
और अहसास की
सतरंगी खुश्बू से
महकते फूलों की
सावन और बसंत की
सुन्दर मन की
खूबसूरत वाटिका में
रोजाना की दिनचर्या से
घर और परिवार की
सोच और समझ से
सहजता और सरलता से
मेरे दिल और दिमाग में

सगाई, वरमाला, सात फेरों
और सात वचनों के बंधन से
हसीन सुहाग रात के अरमान से
कई सारी हसीनायें मन में
रच-बस कर दिल में समाहित हैं

माना कि
यह नाजायज़
और गैरकानूनी है,
मगर मैं
निर्मल प्रेम की
चाहत और कशिश में
दिल और दिमाग से
बेबस और बेक़रार होकर
हसीनाओं की सहमति के
इंतज़ार में मन से ज़रूर हूँ

प्रेम की चाहत
और कशिश की
लाचारी और मज़बूरी से
शराफ़त, सच्चाई
और इंसानियत में
मैं प्रेम का पुजारी
'रावण' तो ज़रूर हूँ
मगर मैं हसीनाओं की
आरज़ू, ख्वाहिश, तमन्ना
और मनोकामनाओं में

मैं दिखावटी चरित्र और
शराफ़त के सफ़ेद वस्त्रों में
दिलो-दिमाग और मन का
मैला और काला नहीं हूँ,
साधू-संत की शक्ल में
मासूम और भोली
औरतों का शिकारी
शैतान और हैवान नहीं हूँ

मैं, भरी सभा में
चीर हरण
करने वाला दुशासन
और अश्लील और अपशब्द
बोलने वाला दानवीर कर्ण
और अपनी पत्नी को
शतरंज में दाँव पर
लगाने वाला धर्म राज
युधिष्ठर पाण्डव भी नहीं हूँ

मैं बलात्कारी, हत्यारा,
ख़ुदगर्ज़, चालाक, मक्कार
लम्पट और बेईमान,
ज़बरदस्ती करने वाला
छेड़ख़ानी करने वाला
तेज़ाब फैंकने वाला
शराफ़त और मौके का
नाज़ायज फ़ायदा उठाने वाला
हैवान और शैतान बनकर

हवस का खूंखार भूखा भेड़िया
और शातिर दरिंदा नहीं हूँ

ऐसा नहीं कि
सिर्फ़ मैं ही
इस तरह से
छल-कपट की
गन्दी मानसिकता
मन में रखकर
बेईमान और चरित्रहीन हूँ
अपितु आदि-अनादि काल से
यह कठु सत्य है कि
अधिकतर पुरुषए राजे-महाराजे,
ऋषि-मुनि और देवता भी
ऐसा छल-कपट करते रहे हैं

इसलिये
पुरुष प्रधान
इस तथा-कथित
सभ्य समाज में
अधिकतर पुरुष
और साधू-संत
दूध के दुले हुये नहीं हैं

ऐसी गन्दी और विकृत
मानसिकता से
अधिकतर पुरुष
मन के काले

और मैले होकर
दिखावटी चरित्र और
शराफ़त के सफ़ेद वस्त्रों में
दिलो-दिमाग और मन से
बेईमान और चरित्रहीन होकर
शराफ़त और मौके का
नाजायज़ फ़ायदा उठाने वाले
शरीफ़ इन्सान के चोले में
शरीफ़ बदमाश और हैवान है

यह तो औरतों के
विवेक पर ही
निर्भर करता है कि
दूध का जला
छाछ को भी
फूंक=फूंक कर पीये

वैसे तो
ईश्वर और प्रकृति ने
हर औरत को
छठी इन्द्रिय के रूप में
यह खूबी
जन्म से ही
उपहार में दी है
जो हर औरत को
समय से पूर्व में ही
पुरुष के अच्छे-बुरे
चरित्र का अहसास करा देती हैं।

राजनीति

बकवास

न सूरत है, न सीरत है
न इल्म है, न हुनर है
मगर चालाक, मक्कार
बेईमान और खुदगर्ज़ हैं
खुले कान के कच्चे हैं
अक्ल से पैदल बच्चे हैं
दो कौड़ी के टुच्चे हैं
चाल-चलन से लुच्चे है
अजब अनपढ़ गंवारों की
गाली-गलौच की बकवास हैं
हिन्दुस्तान की यह राजनीति

अस्पताल

खुली आँखों से अंधे हैं
जहर उगलती ज़ुबान से गंधे हैं
सत्ता के मद में चूर
जनता, शासन और
प्रशासन को कुचलने काले
बिगड़े और पागल हाथी हैं
अजब पागलों का अस्पताल हैं
हिन्दुस्तान की यह राजनीति

फीके पकवान

नशे के व्यापारी हैं
देह के दलाल हैं
जनता के रक्षक ही
जनता के भक्षक हैं
सफ़ेद कपड़ों में
काले गौरख धन्धे हैं
करोड़ों के घोटालेबाज हैं
देश के लुटेरे डाकू हैं
घातक हाथियारों के तस्कर हैं
ऊँची दुकान फीके पकवान हैं
हिन्दुस्तान की यह राजनीति

जेल खाना

निर्दोष के हत्यारे हैं
मासूम के बलात्कारी है
बेबस ग़रीब के अत्याचारी हैं
दशहतगर्दों को पनाह देने वाले हैं
सरकारी ज़मीनों के भूमाफियाँ हैं
अजीब दागियों का जेल खाना है
हिन्दुस्तान की यह राजनीति

सफ़ेद हाथी

बगुला भगत हैं
आस्तीन के साँप हैं
सफ़ेद हाथी है
कुर्सी के चमगादड़ हैं

शेर के रंग में रंगे सियार है
अपनी गली में कुत्ते शेर है
सब-कुछ निगलने वाले अजगर हैं
सफ़ेद हाथियों की बारात है
हिन्दुस्तान की यह राजनीति

जंगलात

शेर की शक्ल में
गीदड़ धमकी है
चालाक लोमड़ी जैसे
चापलूस और मक्कार चमचे है
जिसकी लाठी उसकी भैंस है
सिर्फ़ ईशारे से चलने वाली
बिना अक्ल की नक़ल से
भेड़.बकरियों की जमात है
अजीब जानवरों की जंगलात है
हिन्दुस्तान की यह राजनीति

मैदाने जंग

धर्म के ठेकेदार हैं
जाति के बंटाढार हैं
शहीदों की मौत के सौदागर है
संविधान जलाने वाले हैं
भारत माँ को
डायन कहने वाले हैं
राष्ट्रगान का
अपमान करने वाले हैं
सत्ता के लिये दुश्मन से

हाथ मिलाने वाले है
अंधे, गूंगे, बहरों और
लंगड़ों से जंग का मैदान है
हिन्दुस्तान की यह राजनीति

अखाड़ा

गद्दार, कायर और डरपोक
पीठ पर छुरा घोपने वाले हैं
अपराधियों को पालने वाले हैं
भाईचारे और इंसानियत को
फाँसी पर लटकाने वाले है
पुत्र मोह में धृतराष्ट्र बनकर
महाभारत करवाने वाले है
अजब पहलवानों का अखाड़ा है
हिन्दुस्तान की यह राजनीति

अजायबघर

मोहमाया में जकड़े हैं
मकड़ी के उलझे जाले हैं
ख़ूनी दंगे फसाद की आग में
धर्म और जाति का
तेल और घी डालने वाले हैं
जिस ताली में खाये
उसी में छेद करने वाले हैं
अजब गद्दारों का अजायबघर है
हिन्दुस्तान की यह राजनीति

मदरसा

धूर्त शकुनी की छल-कपट से
शतरंज की चाले चलने वाले हैं
रंजिश और नफ़रत के रखवाले हैं
गिरगिट के रंग की तरह से
पल-पल ईमान बदलने वाले हैं
अजब माहिरों का मदरसा है
हिन्दुस्तान की यह राजनीति

चटपटा अख़बार

परियानाएँ हजम हैं
लाल फीताशाही है
ज़मीन पर ख़याली पुलाव
और काग़जों पर सच्चाई है
वादों के ढपोर शंख है
सिर्फ़ गरजने वाले बादल है
नौ सौ चूहे खाकर
हज को जाने वाले हैं
चटपटी ख़बरों के अख़बार हैं
हिन्दुस्तान की यह राजनीति

काली फाईल

भाई-भतीजा और
जाति का आरक्षण वाद है
शेर के दफ़्तर में
गीदड़ की फ़रियाद है
अजब सफ़ेद कागजों की

रहस्मय काली फाईल है
हिन्दुस्तान की यह राजनीति

दलाली

हवस के पुजारी हैं
ज़मीर के जुंआरी हैं
देश भक्ति से भिखारी हैं
आचरण के भ्रष्टाचारी हैं
इंसानियत से कंगले हैं
कलंक से भी काले है
अजब कोयले की दलाली से
काले हाथों में सफेद दस्ताने हैं
हिदुस्तान की यह राजनीति

मुखौटा

प्यार-मुहब्बत से खल्लास हैं
दीन और ईमान के जल्लाद हैं
खादी में लिपटे अमरीकी है
कमीशन और रिश्वतखोर हैं
मुँह में राम बगल में छुरी है
अजब बहुरूपियों का मुखौटा है
हिदुस्तान की यह राजनीति

नौकरशाह भी अटके हैं
कलमकार भी कड़के हैं
रईस जागीरदारों के खटके है
समझदार भी तो सटके हैं
अभिनेताओं के झटके हैं

अजब तवायफ़ों का कोठा है
हिदुस्तान की यह राजनीति

बेआबरू बाज़ार

पुलिसवालों के डंडे हैं
साधू संत भी तो बिगड़े हैं
सेना वाले भी भटके हैं
खिलाड़ी भी तो लटके हैं
कलाकार भी चटके हैं
सरेआम बेआबरू होकर
बिकता हुआ बाज़ार है
हिदुस्तान की यह राजनीति

सिरफिरों का सर्कस

उद्योगपति भी उखड़े हैं
व्यापारी भी तो उधड़े हैं
समाज सेवी भी बिगड़े हैं
डाकू, चोर, लुटेरे भी सिमटे है
अजब सिरफिरों का सर्कस है
हिन्दुस्तान की यह राजनीति।

एक और एक

बिना पानी के
किसी भी आटे से
रोटी नहीं बन सकती,
बिना मसालों के
स्वादिष्ट सब्जी
नहीं बन सकती,
बिना शक्कर के
कोई सी भी मिठाई
नहीं बन सकती,
बिना विश्वास के
कोई सा भी रिश्ता
मधुरता से मुमकिन
नहीं हो सकता,
बिना मेहनत के
कैसी भी सफलता
नहीं मिल सकती,
बिना ईमानदारी के
चरित्र का निर्माण
नहीं हो सकता,
बिना दीनो-ईमान के
सम्मान मुमकिन नहीं,
स्त्री और पुरुष

अलग-अलग अपूर्ण है
दोनों एक साथ
मिलकर ही पूर्ण है,
बिना जोशो-जुनून के
जीवन के सपने
सच नहीं हो सकते,
बिना विचारों के
शब्द नहीं हो सकते,
बिना निर्मलता के
पवित्रता मुमकिन नहीं,
बिना धर्म के
देश और समाज
ख़ुशहाल नहीं हो साकता,
बिना साहस और वीरता के
कोई भी सैनिक
सैनिक नहीं हो सकता,
बिना दीवानगी के
मुहब्बत अजर-अमर
नहीं हो सकती,
सभी वस्त्र भी
जोड़ी में बनकर ही
सुन्दर पहनावा बनते हैं,
बिना आस्था के
ईश्वर की प्राप्ति
संभव नहीं है,
बिना चाहत
और कशिश के
सच्चा प्यार

मुमकिन नहीं है,
बिना भलाई के
दुआ भी तो
क़ुबूल नहीं होती है,
बिना ऊष्मा के
ऊर्जा मुमकिन नहीं,
बिना जमीन
और पानी के
पोषण के बिना
फ़सलें, पेड़, पौधे
और फूल मुमकिन नहीं,
बिना दीया और बाती के
रोशनी मुमकिन नहीं,
बिना वाष्पीकरण के
आकाश में बादल नहीं
जब बादल नहीं तो
फिर बारिश भी नहीं
जब बारिश नहीं हो तो
सावन और बसंत भी नहीं
फिर प्राणी मात्र जीवन में
ख़ुशियाँ और उमंग भी नहीं

हाँ दाल ज़रूर
अलग बन सकती है
चावल भीअलग से बन सकते हैं,
मगर भोजन करते वक्त
दोनों को एक साथ
मिलाना ही पड़ता है

वैसे तो गणित में
एक और एक
दो ही होते है
मगर सामाजिक
पारिवारिकए धार्मिक
और व्यावहारिक जीवन में
एक और एक मिलकर
ग्यारह होते है

सिर्फ़ निर्मल
और पवित्र प्रेम में
एक और एक मिलकर
दो नहीं एक ही होते है
जो कि ग्यारह से भी
बहुत बेहतर होते है

वर्ना अकेले में तो
तन्हाई, ग़म, बेचैनी
और जुदाई से
मानव जीवन में
श्मशान के जैसा
सन्नाटा और वीरानी है
वैसे भी
एक अकेला चना
भाड़ नहीं फोड़ सकता।

माँ की ममता

अपने पति की
लहूलुहान ताजा लाश
घर के आँगन में पड़ी है
और रस्सियों में जकड़ी
अधमरी लाचार पत्नी
एक बेबस माँ बनकर
हवस के खूँखार
पाँच भूखे भेड़ियों की
बेरहम हाथों की
जंजीरों में जकड़कर
चंगुल में फँसी
अपनी बेटी के लिये
हाथ जोड़कर
रहम की भीख मांगकर
यह याचना कर रही है

मैं तुम्हें लाख बार
दया की भीख मांगकर
यह समझाऊँ कि
अस्मत के लुटने से
ज़लालत का जीवन
नर्क से भी बुरा और

बदतर हो जाता है
फिर भी तुम पाँचों
बलात्कार किये बिना
तुम मानोगे नहीं

मगर मेरी गली
मोहल्ले के बच्चों
मैं तुम्हारी माँ के जैसी हूँ
तुम्हें ख़ुदा का वास्ता
तुम्हें अपने माँ
और बाप की सौगन्ध
तुम्हें अपने ख़ून के
रिश्तों की कसम
तुम्हें अपने दीन
और ईमान की दुहाई
ख़ुदा तुम्हें इस नापाक
हरकत के लिये
कभी भी माफ़ नहीं करेगा
क्योंकि बलात्कार
हर मज़हब में
नाक़ाबिले बर्दाश्त
बहुत बढ़ा संगीन गुनाह है

फिर भी तुमसे
यह याचना है कि
मेरी बारह और
आठ वर्ष की
मासूम बच्चियाँ

तुम्हारी छोटी बहनें
जैसी ही मासूम हैं
इनके साथ बलात्कार
अपनी छोटी बहने समझकर
जरा इंसानियतए शराफत
और नजाकत से करना
वर्ना यह मासूम
असहनीय दर्द से
तड़प-तड़प कर
बेमौत मर जायेगी

इससे ज्यादा
एक अकेली असहाय
खौफ़ज़दा घायल माँ
ममता और करुणा में
बेबस और लाचार होकर
हैवान और शैतान दरिंदों
हवस भूखे भेड़ियों के आगे
और कर भी क्या सकती है।

जबरदस्ती

बिना दिल
और दिमाग की
सोच और समझ के
कैसे अहसास
और कैसे ज़ज्बात,
बिना तन
और मन की
स्वीकृति के
रोम-रोम में
कैसी पवित्रता,
बिना विश्वास के
तन और मन का
कैसा समर्पण,
बिना निर्मलता
सहजता-सरलता के
तन और मन में
कैसा चैन और सुकून,
बिना सहमति के
कैसा जोश और जुनून,
बिना उत्साह
और उमंग के
तन और मन में

कैसी मधुर मस्ती
बिना चुम्बन के
तन और मन के
अंगों में कैसा सुरूर,
बिना बाँहों में
आलिगंगन के
बदन में कैसी गर्मी

जब बदन में
अहसास, विश्वास, उत्साह
और उमंग नहीं हो तो
एक बेबस बेजान बदन
ज़िन्दा मुर्दे के समान है

फिर जबरदस्ती से
शैतानीयत के सहवास में
सिर्फ़ बेजान बदन को
हैवानीयत में
नोंचकर और रौंधकर
अपनी घटिया
और विकृत
मानसिकता से
अपनी हवस की
भूख को शांत करके
मिटाना ही है तो

हवस के खूंखार
भूखे दरिन्दे भेड़ियों

अपनी हवस की
भूख मिटाने के तो
और भी बहुत सारे
आसान साधन है
जिससे अपने
तन और मन को
शांत किया जा सकता है

फिर बलात्कार जैसा
घिघौना और संगीन
पाप और जुर्म करके
मेरे और तुम्हारे
चरित्र को
इस बुरे कर्म से
दागदार करके
मेरे और तुम्हारे
सम्पूर्ण जीवन को
ज़लालत और तौहीन के
जुल्म और सितम से
नर्क से भी बुरा
और बदतर करके
बर्बाद क्यों करते हो।

शजर-ज़मीन और बीज

हर शजर
चाहता है कि
उसका बीज
उर्वरक ज़मीन में
अंकुरित होकर
मासूम, चंचल,
शरारती, नाजुक पौधा
पौष्टिक पोषण से
हरा-भरा, विशाल
और हर तरह की
शारीरिक और मानसिक
ख़ुशहाली से आबाद होकर
छाया और फल देने वाला
स्वस्थ और निरोगी होकर
सम्पूर्ण दीर्घायु शजर बने

क्या सिर्फ़ शजर के
चाहने मात्र से ही
उसका बीज हर तरह से
उपयोगी और ख़ुशहाल
हरा-भरा और विशाल
सम्पूर्ण शजर बन जायेगा

हर एक बीज
अंकुरित नहीं हो पाते हैं
कुछ अन उपयुक्त,
और शारीरिक व
मानसिक रूप से
अल्प विकसित
और कमज़ोर बीज
ज़मीन, मौसम
और प्रकृति के
अनुकूल नहीं होकर
ज़मीन में समाकर
नष्ट और बेकार हो जाते हैं,

कुछ बीज
आधे-अधूरे
अंकुरित होकर
मौसम, ज़मीन
और प्रकृति के
प्रतिकूल हो जाने से
काल का ग्रास बन जाते हैं

कुछ अवांछित
बदनसीब बीज
अंकुरित हो जाते हैं तो
ज़रूरत के ख़ुदगर्ज़
नापाक ईरादों के पैरों तले
बेरहमी से कुचल कर
दफ्न कर दिये जाते हैं

कुछ अंकुरित बीज
प्रतिकूल मौसम
उचित हवा-पानी
और पोषण के बिना
अकाल मौत मर जाते हैं

शेष अंकुरित बीज
जो बच जाते हैं
उन अंकुरित बीजों को
नाजुक पौधे से
सम्पूर्ण शजर
बनने के लिये
सभ्यता और
लोक लाज की
मिट्टी का पोषण,
संस्कारों, मर्यादा के
खाद की खुराक,
ममता, करुणा
और स्नेह के
आँचल के पानी की
ज़रूरत होती है

अंकुरित बीजों को
नाजुक पौधे से
सम्पूर्ण शजर
बनने के लिये
धर्म, देश
और समाज की

परम्पराओं के
ज्ञान और विज्ञान की
हवा और रोशनी,
साथी पौधों के
संग का सत्संग,
दुख और दर्द
ग़म और परेशानी से
बचाव के लिये
दोस्तों और परिवार का
मजबूत ट्री गार्ड,
यौवन और जवानी के
जोश और जुनून पर
समाज रूपी प्रकृति के
नियमों के पालन से
कुशल नियंत्रण और
प्रबंधन की ज़रूरत होती है

अंकुरित बीजों को
नाजुक पौधे से
सम्पूर्ण शजर
बनने के लिये
बराबर के साथी पौधों का
ज़रूरत के समय पर
इंसानियत और भाईचारे से
उचित सहयोग और सहायता,
जीवन के आँधी-तूफानों से
सुरक्षित रहने के लिये
स्वयं पौधे की हिम्मत

ताकत और आत्मविश्वास
सक्षम शजर की छत्र छाया की
सख्त ज़रूरत होती है

अंकुरित बीजों को
नाजुक पौधे से
सम्पूर्ण शजर
बनने के लिये
चरित्र के फल
और फूलों का
स्वयं और साथी पौधों के
सहयोग और मार्गदर्शन से
निरन्तर निखार और विकासए
मेहनत और ईमानदारी की
सतरंगी खुश्बू से
मान और सम्मान के
सावन और बसंत के
महकते गुलशन की
क़िस्मत और क़ुदरत के
बेरहम कहर से सुरक्षा की
सख्त ज़रूरत होती है

एक बीज
तब जाकर के
ज़मीन से
अंकुरित होकर
नाजुक पौधे से
एक विशाल

हरा-भरा और ख़ुशहाल
सम्पूर्ण शजर बन पाता है

बीज के
अंकुरित होने
पौधे से शजर
बनने के लिये
ज़मीन और शजर के
बहुत कुछ करने पर भी
यदि बीज
अंकुरित होकर
पौधे से शजर
नहीं बन पाता है
तो क्या उसके लिये
ज़मीन और शजर ही दोषी है
क्या स्वयं बीज भी
बहुत हद तक दोषी नहीं है

कुछ शजर
और कुछ बीज
नालायक, नाकारा,
निकम्मे, कामचोर,
शराबी, मवाली, जाहिल
चोर, लुटेरे, जेब कतरे
डकैत, देशद्रोही, जुआँरी
गँवार और आलसी होकर
या फिर बीज और शजर
बुरी संगत में पड़कर

ख़ुद ही अपने और चमन के
तनों और शाखाओं पर
बुरे कर्मों की
कुल्हाड़ी मारकर
स्वयं के साथ-साथ
सारे चमन का सम्पूर्ण जीवन
अपने हाथों से बर्बाद करके
ख़ुशियों की खुश्बू से
आबाद और महकते हुये
सारे के सारे गुलशन को
तबाह करके नष्ट कर देते हैं

सिर्फ़ और सिर्फ़
ज़मीन ही नालायक, नाकारा,
निकम्मे, कामचोर,
शराबी, मवाली, जाहिल
चोरए लुटेरे, जेब कतरे
डकैत, देशद्रोही, जुआँरी
गँवार और आलसी
और बुरी संगत के
बीज और शजर को भी
हर तरह से बर्दाश्त करके
तन और मन के
संपूर्ण समर्पण से
सामाजिक, आर्थिक,
मानसिक और शारीरिक
पोषण का सहारा देकर
सारे के सारे गुलशन का

विकास और सुरक्षा करती है
भले ही कितनी भी
विपरीत परिस्थितियाँ
और बद से बदतर
बुरे हालात ही क्यों नहीं हो

कई बार शजर
क़ुदरत और क़िस्मत के
बेरहम कहर से
अकाल मौत मर जाते हैंए
कई बार ज़मीने भी
प्रकृति और क़ुदरत की
बेईमानी और नाइंसाफ़ी से
ऊसर और बन्जर हो जाती हैं

तब भी तो योग्य बीज
बेरहम प्रतिकूल मौसम
और विपरीत परिस्तिथियों में
मेहनत और संघर्ष के
पालन और पोषण से
स्वयं बीज के समर्पण से
अपने आप को
हरा-भरा और विशाल
और हर तरह से आबाद
ख़ुशहाल शजर बना लेते हैं

इसलिये
काफ़ी हद तक

यह बीज पर
निर्भर करता है कि
जब तक
स्वयं बीज नहीं चाहे
तब तक कोई भी
शजर और ज़मीन
समर्थ और योग्य
उपयुक्त बीज को भी
हरा-भरा और विशाल
और हर तरह से ख़ुशहाल
सम्पूर्ण शजर नहीं बना सकता है।

ऋतुराज बसन्त

चारों दिशाओं में
बसन्त का ही राज है
महकता और सुहावना
मौसम ऋतुराज है

हर तरफ प्रकृति के
सुन्दर हसीन नज़ारे
धरा के सर पर
पीले फूलों का ताज है

चमन में हसीन बहारें
और पक्षियों का चहकना
बसंत में प्रकृति का
संगीत और साज़ है

ख़ुद ही विचलित
हो जाता है तन-मन
मधुर मिलन में
ये बसंत का अन्दाज़ है

फूलों की तरह से
खिलता है तन औ मन

बसंत के मौसम में तो
ऐसा ही मिज़ाज है

माँ सरस्वती कृपा निधान
हो जाती है इन दिनों
माँ की साधना में
यह बसंत की नमाज़ है

इन दिनों सतरंगी धरा
स्वर्ग से भी हसीन होती है
बसंत ऋतु पर हमें
यूँ ही नहीं तो नाज़ है

परिवार और आँगन में
ख़ुशियों की महकती बहारें
बसंत से तन और मन में
उत्साह और उमंग का आगाज़ है

बसंत के मौसम में रस्म
और रिवाज़ ऐसे होते हैं कि
तीज और त्यौहारों से
सतरंगी हमारा समाज है

बसंत के मौसम में
ऐसा जोश औ जुनून
बुढे.बीमार इंसान भी
फिर तो जाँबाज़ है

बसंत का हसीन मौसम
और बेरी पिया परदेश में
मधुर मिलन की यादों में
यह प्रियतम को आवाज़ है

प्रकृति में हर तरफ़
हसीन क़ुदरत के नज़ारे
सब ऋतुओं में बसंत
ऋतुओं का सरताज है

सारे के सारे पंच तत्व
और सारे ग्रह-नक्षत्र
बसंत पंचमी को
अनुकूल होने का रिवाज़ है

कोई भी सीमायें
और बंधन नहीं है
बसन्त से नील गगन में
तन-मन की मस्त परवाज़ है

सतरंगी और हसीन
मदमस्त बसंत का
असर ऐसा होता है कि
तन-मन और
दिलो-दिमाग पर
मखमली मसाज है।

सनातन धर्म संस्कृति : एक

सनातन
धर्म संस्कृति में
जो चूहे
कीड़े-मकोड़े
और जानवर
हमारे घरों में
कीमती सम्पदा
कपड़े, अनाज, दालें
दूध-दही, फर्नीचर
और अन्य खाने-पीने में
दिनचर्या के सामानों
और खेतों में
अनमोल फसलों का
नुकसान करते हैं

इन सबसे
बचाव करने के लिये
हम इन सबको
अधिकतर पिंजरे में
सुरक्षित पकड़कर
दूर छोड़ देते हैं
या फिर इनको

हल्का सा
बल प्रयोग करके
शारीरिक नुकसान
पहुँचाये बिना
दूर भगा देते हैं
इनको जान से
मारते नहीं हैं
भले ही इन्होने
कितना भी बड़ा
नुकसान ही
क्यों नहीं किया हो

नहीं चाहते हुये भी
अगर मज़बूरी में
इनको नष्ट भी
करना पड़ता है तो
जिस साधन का
उपयोग करते है
उसे ज़हर नहीं
अपितु उसे
दवा कहते है
जैसे चूहे और
खेती की दवा
और दवा से
उपचार होता है

इतनी और ऐसी
विशाल, निर्मल

पवित्र, सहज-सरल,
भाईचारे और
मानवता से समृद्ध
'क्षमा वीरस्य भूषणम'
और 'अहिंसा परमो धर्म' की
विचारधारा से सम्पन्न
सनातन धर्म संस्कृति है
जो आदि-अनादि काल से
परम शाश्वत सत्य होकर
अजरता और अमरता के साथ
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् है
इसलिये जय-जय सत्य
सनातन धर्म संस्कृति
और शत-शत नमन।

सनातन धर्म संस्कृति : दो

सनातन
धर्म संस्कृति में
हर जीव-जन्तु
भले ही वो
कितना भी
खूंखार और हिंसक
क्यों नहीं हो
और सभी प्रकार के
पेड़-पौधों, नदियों
और निर्जीव
कण-कण में भी
ईश्वर द्वारा प्रदत्त
पवित्र आत्मा के
अस्तित्व को
स्वीकार करती है
यहाँ तक कि
सड़े-गले कचरे की भी
जैविक खाद के रूप में
अनमोल महत्व
और उपयोग को देखते हुये
मांगलिक कार्यों में
रेवड़ी के रूप में

पूजा-अर्चना की
सामाजिक, धार्मिक
और पारिवारिक
रीति-रिवाज़ और परम्परा है

गाय के महत्व
और उपयोग को
समझते हुये
गाय में
सभी देवताओं का
निवास मानकर
और माँ समझकर
ईश्वर के अंश में
पूजा-अर्चना करते हैं

सबसे ज़्यादा
हिंसक जीव
शेर को
माँ दुर्गा की
सवारी समझ कर
ईश्वर के अंश में
पूजा-अर्चना करते हैं

इतनी और ऐसी
विशाल, निर्मल।
पवित्र, सहज-सरल,
भाईचारे और
मानवता से समृद्ध

'वसुधैव कुटुम्बकम्'
और 'अहिंसा परमो धर्म' की
विचारधारा से सम्पन्न
सनातन धर्म संस्कृति है
जो आदि-अनादि काल से
परम शाश्वत सत्य होकर
अजरता और अमरता के साथ
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् है
इसलिये जय-जय सत्य
सनातन धर्म संस्कृति
और शत-शत नमन।

सनातन धर्म संस्कृति : तीन

सनातन
धर्म संस्कृति में
ज़हरीले सर्पों को
आदि देव महादेव के
गले में धारण से
नाग देवता मानकर
ईश्वर के अंश में
पूजा-अर्चना करते है

भगवान शिव,
काल भैरव
और गणेश जी के द्वारा
बैल, कुत्ते और चूहे को
अपनी सवारी
स्वीकार करने
और हाथी में
गणेश जी का
साकार रूप देखकर
हम दीन-हीन
पशुओं की भी
ईश्वर के अंश में
पूजा-अर्चना करते है

भगवान विष्णु
और श्री लक्ष्मी के द्वारा
गरुड़ और उल्लू को
अपना वाहन मानने से
और कौवे में पितरों का
निवास समझकर
हम पक्षियों की भी
ईश्वर के अंश में
पूजा-अर्चना करते है

इतनी और ऐसी
विशाल, निर्मल।
पवित्र, सहज-सरल,
भाईचारे और
मानवता से समृद्ध
'वसुधैव कुटुम्बकम्'
और 'अहिंसा परमो धर्म' की
विचारधारा से सम्पन्न
सनातन धर्म संस्कृति है
जो आदि-अनादि काल से
परम शाश्वत सत्य होकर
अजरता और अमरता के साथ
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् है
इसलिये जय-जय सत्य
सनातन धर्म संस्कृति
और शत-शत नमन।

सनातन धर्म संस्कृति : चार

सनातन
धर्म संस्कृति में
पशुओं से उनकी प्रवृति
और शारीरिक संरचना से
शारीरिक और मानसिक
कार्यक्षमता के अनुसार
पशुओं को घर का
पारिवारिक सदस्य मानकर
मानवता और भाईचारे से
काम लिया जाता है
असहाय पशुओं पर
अत्याचार नहीं किया जाता है
और न ही पशुओं का
निर्ममता से वध करके
माँस खाया जाता है

अशोक और पीपल के
वृक्ष और तुलसी के पौधे को
पवित्र और पूज्यनीय मानकर
और अन्य सभी वृक्षों
और सभी पौधों व घास को
प्राणी मात्र के स्वस्थ

निरोगी और दीर्घायु
जीवन के लिये
प्रकृति का अनमोल
उपहार मानकर
ईश्वर के अंश में
पूजा-अर्चना करते है

इतनी और ऐसी
विशाल, निर्मल
पवित्र, सहज-सरल,
भाईचारे और
मानवता से समृद्ध
'वसुधैव कुटुम्बकम्'
और 'अहिंसा परमो धर्म' की
विचारधारा से सम्पन्न
सनातन धर्म संस्कृति है
जो आदि-अनादि काल से
परम शाश्वत सत्य होकर
अजरता और अमरता के साथ
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् है
इसलिये जय-जय सत्य
सनातन धर्म संस्कृति
और शत-शत नमन।

सनातन धर्म संस्कृति : पाँच

सनातन
धर्म संस्कृति में
प्राणी मात्र के लिये
पानी के महत्व
और उपयोग को
जल जी जीवन है की
अवधारणा को समझ कर
नदियों को माँ स्वीकार कर
ईश्वर के अंश में
पूजा अर्चना करते हैं

पंच तत्वों
पृथ्वी, अग्नि, जल,
वायु और आकाश
और गृह-नक्षत्रों की
प्राणी मात्र के लिये
उपयोगिता और
महत्व को समझते हुये
देवता स्वीकार कर
ईश्वर के अंश में
पूजा-अर्चना करते हैं

इतनी और ऐसी
विशाल, निर्मल
पवित्र, सहज-सरल,
भाईचारे और
मानवता से समृद्ध
'वसुधैव कुटुम्बकम्' की
विचारधारा से सम्पन्न
सनातन धर्म संस्कृति है
जो आदि-अनादि काल से
परम शाश्वत सत्य होकर
अजरता और अमरता के साथ
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् है
इसलिये जय-जय सत्य
सनातन धर्म संस्कृति
और शत-शत नमन।

सनातन धर्म संस्कृति : छह

सनातन
धर्म संस्कृति में
हम गाय
और कुते को
श्रद्धा से रोटी खिलाते हैं
निर्बल चीटियों
और मछलियों को
आटा खिलाते हैं
और पक्षियों को
दाना डालते हैं
साँप और कुत्तों को
श्रद्धा से दूध पिलाते हैं

जब सनातन धर्म संस्कृति
बेज़ुबान जानवरों,
पक्षियों, कीड़े-मकोड़ों
और अन्य समस्त
जीव-जंतुओं के साथ
ऐसी मानवता रखती है
तो फिर
इन्सानों के साथ
किसी भी रूप में

बुरा करना तो
बहुत दूर की बात है
बुरा सोच भी नहीं सकती

सनातन धर्म संस्कृति में
अगर कोई शत्रु भी
शरण में आता है तो
उसे भी माफ़ कर
गले से लगाती है
भले ही परिणाम
चाहे कुछ भी
क्यों नहीं हो
यानि कि
प्राण जाये पर
वचन न जाये

जब सनातन
धर्म संस्कृति में
शत्रु के साथ भी
मान-सम्मान के साथ
अच्छा व्यवहार
किया जाता है तो
जो इन्सान
भाईचारे, इंसानियत
शराफ़त, सहयोग, सहज।
सरल, निर्मल, सद्भावना
प्यार-मुहब्बत और
दीनो-ईमान से रहते हैं

उनके साथ बुरा व्यवहार
करना तो नामुमकिन है

इसलिये
इतनी और ऐसी
विशाल, निर्मल।
पवित्र, सहज-सरल,
भाईचारे और
मानवता से समृद्ध
'अतिथि देवो भव'
'क्षमा वीरस्य भूषणम्'
'अहिंसा परमो धर्म'
'वसुधैव कुटुम्बकम्' की
विचारधारा से सम्पन्न
सनातन धर्म संस्कृति है
जो आदि-अनादि काल से
परम शाश्वत सत्य होकर
अजरता और अमरता के साथ
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् है
इसलिये जय-जय सत्य
सनातन धर्म संस्कृति
और शत-शत नमन।

भले ही औरत

सरस्वती

भले ही औरत
अनपढ़ है
मगर औरत
अपने परिवार
और समाज को
शिक्षित कर लेती है
तो फिर औरत
सम्पूर्ण जगत में
ज्ञान की देवी
सरस्वती के साक्षात
रूप में साकार होकर
पूज्यनीय होती है

श्री लक्ष्मी

भले ही औरत
नौकरी-पेशे से
आय और रोज़गार
करने वाली नहीं है
मगर औरत
मितव्यता से
घर-परिवार चलाकर

बचत कर लेती है
तो फिर औरत
सम्पूर्ण जगत में
धन की देवी
श्री लक्ष्मी के
साक्षात रुप में
साकार होकर
पूज्यनीय होती है

अन्नपूर्णा देवी

भले ही औरत
साधनहीन है
मगर कुशलता से
अपने परिवार का
लालन-पालन कर लेती है
तो फिर औरत
सम्पूर्ण संसार में
देवी अन्नपूर्णा के रूप में
साक्षात व साकार होती है

इसलिये
औरत ही
वह धुरी
और केंद्र बिंदु है
जिस पर पुरुष
परिवार, बच्चे
समाज और देश का
भविष्य, मान-सम्मान

शान और शोहरत
इज्ज़त और प्रतिष्ठा
निर्भर करती है
क्योंकि
जहाँ पर नारी का
सम्मान होता है
वहाँ पर ही
देवता निवास करते हैं
भले ही औरत
माँ, पत्नी, बहिन-बेटी
दोस्त, भाभी, चाची
दादी-नानी, बुआ-मौसी के
किसी भी रूप से ही
जीवन में क्यों नहीं हो
हमेशा पूजनीय ही होती है

देवी सीता

भले ही औरत
किसी के भी
योग्य नहीं है
मगर औरत
विपरीत परिस्थितियों में
हमेशा अपने पति का
भरपूर साथ देती है
तो फिर औरत
सम्पूर्ण संसार में
देवी सीता के रूप में
साक्षात साकार होती है

रानी पद्मनी

भले ही औरत
साहसी और वीर नहीं है
मगर जब अपनी
अस्मत और आबरू पर
ख़तरा उत्पन्न हो जाता है
तो फिर औरत
जौहर करके
सम्पूर्ण संसार में
रानी पद्मनी के
साक्षात रुप में
साकार हो जाती है

भले ही औरत
धर्म की ज्ञाता नहीं है
मगर अपने पति को
अधर्म करने से बचाती है
तो फिर औरत
सम्पूर्ण संसार में
देवी मंदोदरी के रूप में
साक्षात् पतिव्रता होकर
साकार हो जाती है

गांधारी

भले ही
औरत के पास
चुनाव करने का
सम्पूर्ण अधिकार है

मगर जैसा भी है
मेरा पति मेरा देवता है
जब इस अवधारणा से
अँधे पति को भी
मन से स्वीकार कर
सारी उम्र के लिये
स्वेच्छा से सहर्ष
अंधी बन जाती है
तो फिर औरत
गांधारी के रूप में
साक्षात और साकार होकर
पतिव्रता हो जाती है

इसलिये
औरत ही
वह धुरी
और केंद्र बिंदु है
जिस पर पुरुष
परिवार, बच्चे
समाज और देश का
भविष्य, मान-सम्मान
शान और शोहरत
इज्ज़त और प्रतिष्ठा
निर्भर करती है
क्योंकि
जहाँ पर नारी का
सम्मान होता है
वहाँ पर ही

देवता निवास करते हैं
भले ही औरत
माँ, पत्नी, बहिन-बेटी
दोस्त, भाभी, चाची
दादी-नानी, बुआ-मौसी के
किसी भी रूप से ही
जीवन में क्यों नहीं हो
हमेशा पूजनीय ही होती है

देवी पार्वती

भले ही औरत
तप और तपस्या से
इच्छित वरदान
प्राप्त होने के बाद भी
जटा और सर्प धारी
श्मशान की राख से
श्रृंगार करने वाले
चर्म वस्त्र को
धारण करने वाले
नर मुण्डों की
माला धारण करने वाले
सांसारिक मोहमाया से दूर
विचित्र और अजूबे
पारिवारिक गृहस्थ
जीवन की सुख-सुविधा से
बहुत दूर रहने वाले
बेलगाम साधना में रत
मनमौजी और औघड़

शंकर जैसे पति को भी
सहर्ष मन से
स्वीकार कर लेती है
तो फिर औरत
सम्पूर्ण जगत में
देवी पार्वती का
साक्षात और साकार रूप में
पतिव्रता हो जाती है

पन्ना धाय

भले ही औरत
असहाय, बेबस
और लाचार है
मगर कर्तव्य निभाते वक्त
अपने पुत्र का भी
सहर्ष बलिदान कर
सम्पूर्ण संसार में
फिर तो मज़बूर औरत
क़ुर्बानी की मिसाल
माँ पन्ना धाय बन जाती है

रानी लक्ष्मी बाई

भले ही औरत
समर्थ और योग्य नहीं है
मगर आन-बान-शान
और मान-सम्मान
और अपने हितों की
सुरक्षा के लिये

अंग्रेजों की विशाल सेना से
बहादुरी से अकेली लड़कर
अपना सब कुछ लुटाकर
और अपनी जान की
बाज़ी लगाकर
सम्पूर्ण संसार में
वीरांगना की मिसाल बनकर
झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई
जगत में अमर हो जाती है

इसलिये
औरत ही
वह धुरी
और केंद्र बिंदु है
जिस पर पुरुष
परिवारए बच्चे
समाज और देश का
भविष्य, मान-सम्मान
शान और शोहरत
इज्ज़त और प्रतिष्ठा
निर्भर करती है
क्योंकि
जहाँ पर नारी का
सम्मान होता है
वहाँ पर ही
देवता निवास करते हैं
भले ही औरत
माँ, पत्नी, बहिन-बेटी

दोस्त, भाभी, चाची
दादी-नानी, बुआ-मौसी के
किसी भी रूप से ही
जीवन में क्यों नहीं हो
हमेशा पूजनीय ही होती है

मीरा

भले ही औरत
धर्म और अध्यात्म
तप और तपस्या की
ज्ञाता नहीं है
मगर जब
भक्ति की भावना
मन में जाग्रत होती है
तो फिर औरत
शाही राज-पाट की
सुख और सुविधाओं
को भी छोड़कर
कृष्ण की भक्ति में
तन-मन से मग्न होकर
साक्षात् मीरा के रूप से
भक्त में साकार होकर
निर्मल और पवित्र
सहज और सरल
भक्ति की मिसाल बनकर
सम्पूर्ण संसार में
अमर हो जाती है

राधा

भले ही औरत
प्रेम की परिभाषा
नहीं समझती है
मगर जब औरत
मन की निर्मल
और पवित्र भावनाओं से
सहज और सरल
स्वाभाविक प्रेम करती है
तो फिर औरत
कृष्ण के प्रेम में मग्न
विरह की व्याकुल वेदना से
साक्षात राधा के रूप से
प्रेम की मूर्ति साकार होकर
सम्पूर्ण संसार में
अजर और अमर हो जाती है

हाड़ी रानी

भले ही औरत
अपने गृहस्थ जीवन
और शृंगार में व्यस्त रहती है
मगर जब औरत
कर्तव्य और ज़िम्मेदारी से
विमुख अपने पति को
सावधान और सचेत करती है
तो फिर औरत
प्रेम की निशानी में
ख़ुद अपना शीश काटकर

अपने पति को भेंट कर
साक्षात हाड़ी रानी से
जगत में साकार होकर
अजर और अमर हो जाती है

इसलिये
औरत ही
वह धुरी
और केन्द्र बिंदु है
जिस पर पुरुष
परिवार, बच्चे
समाज और देश का
भविष्य, मान-सम्मान
शान और शोहरत
इज्ज़त और प्रतिष्ठा
निर्भर करती है
क्योंकि
जहाँ पर नारी का
सम्मान होता है
वहाँ पर ही
देवता निवास करते हैं
भले ही औरत
माँ, पत्नी, बहिन-बेटी
दोस्त, भाभी, चाची
दादी-नानी, बुआ-मौसी के
किसी भी रूप से ही
जीवन में क्यों नहीं हो
हमेशा पूजनीय ही होती है

रानी अहिल्या बाई

भले ही औरत
पुरुष के जितनी
ताकतवर और समर्थ नहीं है
मगर औरत
दिल और दिमाग से
ममता, करुणा, स्नेह
इंसानियत, भाईचारे
प्यार-मुहब्बत, शराफ़त
सच्चाई, नेकी और भलाई
सहयोग, सद्भावना, समानता
सहजता, सरलता, निर्मलता
पवित्रता और उचित न्याय से
सभी मुश्किल समस्याओं का
सभी को मान्य समाधान करके
बेहतर शासन और प्रशासन से
देशए प्रदेश और प्रजा का
समुचित विकास करके
रानी अहिल्या बाई होल्कर
और रज़िया सुल्तान के
साक्षात रूप में साकार होकर
इतिहास में अमर हो जाती है

नव दुर्गा

भले ही औरत
इतनी समर्थ, योग्य
और शक्तिशाली नहीं है
मगर शारीरिक, मानसिक

सामाजिक, राजनैतिक,
पारिवारिक, धार्मिक
प्राकृतिक और आर्थिक
समस्याओं और विवादों का
मेहनत और ईमानदारी से
कार्य कुशलता की भावना से
उचित समाधान कर लेती है
तो फिर औरत
साक्षात शक्ति स्वरूपा
नव दुर्गाओं के रूप से
सम्पूर्ण संसार में साकार होकर
हमेशा पूजनीय हो जाती है

मदर टेरेसा

भले ही औरत
इतनी साधन
समपन्न नहीं है
जो समाज सेवा कर सके
मगर औरत
निर्मलता और पवित्रता
सहजता और सरलता से
सेवा की सद्भावना से
निर्धन, असहाय, बीमार
बूढ़ों और बच्चों की सेवा करके
साक्षात मदर टेरेसा के रूप से
ममता, करुणा, स्नेह
और दया की मूर्ति
निर्मल और निश्छल प्रेम से

संसार में साकार होकर
अजर और अमर हो जाती है

महादेवी वर्मा

भले ही औरत
पढ़ी-लिखी, ज्ञानी
और साहित्य की
ज्ञाता नहीं है
मगर औरत
दिल और दिमाग से
संवेदनशील, निर्मल
पवित्र, सहज और सरल
मन और मस्तिष्क से
करुणा की कलम बनकर
साक्षात महादेवी वर्मा के रूप से
जगत में साकार होकर
सत्यम शिवम् सुन्दरम् हो जाती है

शूपर्णखा

भले ही
अधिकतर औरतें
ऐसी नहीं होती हैं
मगर जब औरत
किसी पराये पुरुष पर
बुरी नज़र से डोरे डालती है
तो फिर औरत
अपनी नाक कटवा कर
चुल्लू भर पानी में डूबकर

परिवार की इज्ज़त
मिट्टी में मिलाकर
साक्षात शूपर्णखा के
साकार रूप से
सारे के सारे जगत में
बदनाम हो जाती है

द्रोपदी

भले ही औरत
बहुत सोच-विचार कर
गरिमा से बात करती है
मगर जब औरत
बिना विवेक के बोलती है
तो फिर औरत
अपनी जुबान से
परिवार और समाज में
महाभारत करवाकर
साक्षात द्रोपदी के रूप से
सारे जगत में साकार होकर
सब की नज़र में बुरी बन जाती है

कैकेयी

भले ही औरत
अच्छा-बुरा सोचकर
विवेक से काम करती है
मगर जब औरत
किसी के बहकावे में
स्वार्थवश आ जाती है

तो फिर औरत
अपने भरे-पूरे परिवार को
तहस-नहस करके
साक्षात कैकेयी के रूप से
समाज में साकार होकर
ख़ुशहाल परिवार की
बर्बादी का कारण बन जाती है

इसलिये
औरत ही
वह धुरी
और केन्द्र बिंदु है
जिस पर पुरुष
परिवार, बच्चे
समाज और देश का
भविष्य, मान-सम्मान
शान और शोहरत
इज्ज़त और प्रतिष्ठा
निर्भर करती है
भले ही औरत
माँ, पत्नी, बहिन-बेटी
दोस्त, भाभी, चाची
दादी-नानी, बुआ-मौसी के
किसी भी रूप से ही
जीवन में क्यों नहीं हो
हमेशा पूजनीय ही होती है।

कम से कम : एक

सर पर बोझा
लेकर चल रहे
इन्सान का बोझा
अगर हम
कम नहीं कर सकते
तो कम से कम
उसे रास्ता तो जल्दी दें
ताकि वह जल्दी से जल्दी
अपनी मंजिल तक पहुँच जाये

अगर हम सोने की
परख नहीं कर सकते
तो हम सोने को
पीतल तो
भले ही समझ ले
मगर कम से कम
इतनी तो बेईमानी
नहीं करें की सोने को कोयला ही
साबित कर दें

किसी की मुश्किल
राहों का हमसफ़र

बनना तो
बहुत बड़ी बात है
अगर हम किसी की
आसान राहों के
हमसफ़र
नहीं बन सकते
तो कम से कम
उसकी राहों में
काँटे तो नहीं बिछायें।

कम से कम : दो

अगर हम किसी की
चाहत, कशिश, प्यार
भावनाओं और अहसास की
कद्र नहीं कर सकते
तो कम से कम
सोच-समझ कर
उसका दिल तो नहीं तोड़े

जब हम किसी के
ख़ून और दूध के
स्वाभाविक रिश्तों
और नातों का
सृजन तो
नहीं कर सकते
तो कम से कम
ऐसा तो नहीं करें कि
अपने फ़ायदे के लिये
रंजिश और नफ़रत से
भाई-भाई और बाप-बेटे को
एक दूसरे के
ख़ून के प्यासे बना दें

हमारी ख़ुदगर्ज़
सोच और समझ से
अगर हम किसी के
दोस्त नहीं बनते
तो कम से कम
चालकी और मक्कारी से
अपने फ़ायदे के लिये
उसके दुश्मन तो नहीं बनें।

कम से कम : तीन

कोई इन्सान
हताश, निराश
और परेशान है
अगर हम हमदर्दी
और प्यार के
दो बोल, बोल कर
उसके दु:ख और दर्द को
कम तो नहीं कर सकते
तो कम से कम
उसका मजाक उड़ाकर
उसे मानसिक रूप से
परेशान तो नहीं करें

अगर हम किसी
अशिक्षित को
शिक्षित नहीं कर सकते
तो कम से कम
उसकी अज्ञानता का
मजाक तो नहीं करें

अगर हम
किसी ग़रीब की

मदद नहीं कर सकते
तो कम से कम
इंसानियत के वास्ते
उसकी दयनीय दुर्दशा पर
ताने तो नहीं मारे।

कम से कम : चार

'माँगन मरन समान है'
फिर भी कोई इन्सान
लाचार और बेबस होकर
भीख माँगता है
फिर भी हम
किसी भिखारी को
भीख नहीं देते
तो कम से कम
भिखारी को अपशब्द तो
बिल्कुल भी नहीं कहें

अगर हम
किसी भटके हुये
परेशान इन्सान को
राह तो नहीं दिखा सकते
तो कम से कम
उस भटके राहगीर को
ख़ुद गुमराह तो नहीं करें

अगर हम
किसी नादान
और नासमझ की

अनजाने में की गई
ग़लतियों को
समझकर भी
ठीक नहीं करते
तो कम से कम
उस मासूम को
माफ़ ही कर दें।

कम से कम : पाँच

अगर हम
किसी की बुराइयों
और दुर्व्यसनों को
नहीं छुड़ा सकते
तो कम से कम
उसे कोई भी
बुरी लत तो
जानबूझकर नहीं लगायें

जो बेरहम
और बदनसीब
बेटियों की गर्भ में
निर्मम भ्रूण हत्या कर देते हैं
या फिर बेमन से
पैदा हुई बेटियों के साथ
पालन-पोषण में
भेदभाव करते हैं
उन अभागों को
यह मालूम नहीं हैं कि
सक्षम बेटियाँ
परिवार पर बोझ नहीं हैं
परिवार में बेटियाँ

ख़ुशहाली की प्रतीक हैं
वो अभागे इन्सान
कम से भी कम
इतना तो करें कि
जो बची हुई बेटियाँ हैं
उनके साथ छेड़खानी
और बलात्कार तो नहीं करें
या बेटियों को शारीरिक
और मानसिक प्रताड़ना से
बेरहम ख़ुदकुशी के लिये
मज़बूर तो नहीं करें
या फिर बेटियों को
दहेज की चिता पर
कम से भी कम
ज़िन्दा तो नहीं जलायें।

कम से कम : छह

अगर हम
किसी योग्य व्यक्ति को
मान-सम्मान नहीं दें सकते
तो कम से कम
उसे अपमानित तो नहीं करें

अगर हम किसी के
ज्ञान और कला की
तारीफ नहीं करें
तो कम से कम
उसकी सबके सामने
बुराई और आलोचना
तो नहीं करें

अगर हम
किसी के सपने को
साकार करने में
मदद नहीं कर सकते
तो कम से कम
उसके सपने को तोड़ने के लिये
मुश्किलें और व्यवधान तो
उत्पन्न नहीं करें

अगर कोई
अपने किये हुये
बुरे कर्मों पर
मन से शर्मसार है
अगर हम
उसे माफ़ नहीं करते
तो कम से कम
उसकी तौहीन करके
उसे ज़लील तो नहीं करें।

कम से कम : सात

वैसे तो शजर
हम सब के लिये
प्रकृति के नायाब
और अनमोल उपहार हैं
जो हमें बहुमूल्य छाया
फल-फूल, हवा, लकड़ी
और बारिश इत्यादि
अपने सम्पूर्ण जीवन में
निरन्तर नि:शुल्क देकर
दानवीर कहलाते हैं
अगर हम
पेड़ नहीं लगा सकते
तो कम से कम
हरे-भरे जवान
शजर को तो नहीं काटे

पानी का सृजन तो
हमारे लिये असंभव है
अगर हम
आसानी से
नि:शुल्क उपलब्ध पानी से
किसी प्यासे की

प्यास नहीं बुझाते हैं
और पानी को
नष्ट कर देते हैं
या मटका फोड़ देते हैं
या फिर पानी को
मटमैला कर देते हैं
यहाँ तो तक तो
फिर भी ठीक है
मगर हम
कम से कम
पानी में तो
ज़हर नहीं मिलायें।

कम से कम : आठ

अगर हम
क़ानून बनाने
योग्य नहीं हैं
और न ही हम
क़ानून के रखवाले हैं
तो कम से कम
हम क़ानून तो नहीं तोड़े
या फिर किसी और को
क़ानून तोड़ने के लिये
प्रेरित और उत्साहित तो नहीं करें

अगर हम
अपने देश के लिये
कुछ भी करने लायक नहीं हैं
या फिर जानबूझकर
कुछ भी नहीं करते हैं
तो कम से कम
देश के संविधान के अनुसार
अच्छे और सच्चे
नागरिक तो बनकर रहे
और देश से गद्दारी तो
बिल्कुल भी नहीं करें

अगर हम किसी को
सफ़ल नहीं बना सकते
तो कम से कम
उसके सफल होने के
मेहनत और ईमानदारी के
सार्थक प्रयासों में
अड़चन पैदा करके
उसे हताश और निराश करके
जानबूझकर असफल तो नहीं करें।

कम से कम : नौ

अगर हम औरतों को
समानता और सम्मान का
उचित दर्ज़ा नहीं देते हैं
तो कम से कम
औरतों के साथ
दुर्भावना और हीनभावना तो नहीं रखे
और औरतों को
उपभोग की वस्तु समझकर
यौन हिंसा और छेड़खानी से
प्रताड़ित तो नहीं करे

अगर हम किसी की
शारीरिक और मानसिक
विकलांगता को
दूर नहीं कर सकते
तो कम से कम
किसी भी अपाहिज को
किसी भी स्थिति में
ज़लील तो नहीं करें

अगर हम किसी के
आत्मविश्वास और

उत्साह और उमंग में
सहयोग नहीं कर सकते
तो कम से कम
उसे हैरान और परेशान कर
हताश और निराश तो नहीं करें।

कम से कम : दस

अगर हम किसी के
सोच-विचार
और भावनाओं से
सहमत नहीं हैं
तो कम से कम
उसकी भावनाओं का
अनादर करके
खिलवाड़ तो नहीं करें।

काल्पनिक कायरता

गुज़रे ज़माने के
सतरंगी फूलों की
खुश्बू से महकते
और घनघोर पेड़ों की
हरियाली से आबाद
हरे-भरे गुलशन में
बहुत सारे समर्थ
पेड़ और पौधे
ना कुछ
नागफनी के
नागों की शक्ल में
नकली नागों के
आतंक से डर कर
उदास, ग़मगीन, ख़ामोश
और खौफज़दा होकर
आज के उजड़े हुये
वीरान चमन में
पतझड़ के जैसे
जर्जर होकर
हैरान, परेशान, हताश
और निराश खड़े है
कि कहीं

नागफनी में
नागों की शक्ल में नाग
हमें डस तो नहीं लेगे

क्या पेड़ और पौधों के
ऐसे मानसिक अवसाद का
इलाज मुमकिन है
क्या पेड़ और पौधों का
काल्पनिक डर
उजड़े हुये
वीरान चमन के लिये
ख़ुद ज़िम्मेदार तो नहीं है

इलाज मुमकिन है
अगर ख़ुद नागफनी
अपने साथी पेड़.पौधों को
विश्वास और भरोसा देकर
घातक जंगली जानवरों
और नुकसान दायक
ज़हरीले जीव-जंतुओं को
अपनी नागों की शक्ल में
नागों से डराकर
गुलशन की हिफ़ाज़त करें ।

सुसाइड नोट

जिन्होंने ने भी
मेरी शराफ़त, सच्चाई,
वफ़ा, ख़ुद्दारी, विश्वास
मेहनत और ईमानदारी का
नाजायज़ फ़ायदा उठाकर
मुझे हताश, निराश
हैरान और परेशान करके
मेरा सामाजिक, आर्थिक
धार्मिक, पारिवारिक
राजनैतिक, मानसिक
शारीरिक उत्पीड़न
और शोषण किया है
उन्हें, मैं ज़िन्दा रहते हुये
किसी भी प्रकार की
सज़ा देने में समर्थ नहीं हूँ
और न ही देश का क़ानून
मेरी शराफ़त का साथ देता है

अगर मैं
बेहद मज़बूरी में
आत्महत्या की वज़ह
'सुसाइड नोट' में लिखकर

बेरहम ख़ुदकुशी कर लेता हूँ
तो मेरी बेमौत आत्महत्या
उन्हें सज़ा ज़रूर दिला देगी
क्योंकि आत्म हत्या के लिये
किसी को प्रेरित करना
भारतीय दण्ड संहिता के अनुसार
क़ानून दण्डनीय अपराध है

ओह! मेरे देश के क़ानून
ओह! मेरी आत्म हत्या
तुम दोनों मेरे लिये
कितने अच्छे हो
तुम्हारा तहेदिल से
बहुत-बहुत शुक्रिया
ज़िन्दा रहते हुये न सही
मेरी बदहाल और बेरहम
ख़ुदकुशी के बाद तो
मुझे इन्साफ़
मिल ही जायेगा
इस प्रकार
मेरी तड़पती और भटकती
दिवंगत मृत आत्मा को
शांति मिल ही जायेगी
ॐ शांति ॐ, ॐ शांति ॐ।